गाँधी स्मारक इन्टर विद्यालय, जहानाबाद के शताब्दी समारोह के अवसर पर बिहार के राज्यपाल श्री राम नाथ कोविन्द का संबोधन

दिनांक–28.11.2016, समय–पूर्वा॰ 11.00 बजे, स्थान–जहानाबाद)

गाँधी स्मारक इन्टर विद्यालय, जहानाबाद के शताब्दी–समारोह में मुख्य रूप से उपस्थित बिहार सरकार के लोक स्वास्थ्य अभियंत्रण तथा कानून मंत्री श्री कृष्ण नन्दन प्रसाद वर्मा जी, माननीय सांसद श्री अरूण कुमार जी, विधायक श्री मुन्द्रिका सिंह यादव जी, विधान पार्षद एवं बिहार माध्यमिक शिक्षक संघ के अध्यक्ष श्री केदारनाथ पाण्डेय जी, विधान पार्षद श्री संजीव श्याम सिंह जी, कार्यक्रम में उपस्थित शिक्षक एवं छात्रगण, मीडिया– प्रतिनिधिगण, देवियों एवं सज्जनों!!

राज्य के सबसे प्राचीन विद्यालयों में से एक गाँधी स्मारक इन्टर विद्यालय के शताब्दी–समारोह में पहुँचकर मुझे हार्दिक प्रसन्न्ता हुई है। आप सभी अवगत हैं कि पहले इस विद्यालय का नाम वी॰टी॰ हाई स्कूल था, जिसकी स्थापना एक अंग्रेज ऑफिसर सर सैमुअल वी॰टी॰ के द्वारा की गई थी। बाद में देश को आजादी मिलने के बाद, इस विद्यालय का नामकरण राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी के नाम पर कर दिया गया। मुझे विश्वास है कि यह शैक्षणिक संस्था, न केवल राष्ट्रपिता की ऐतिहासिक विरासत को संभाल रही होगी, बल्कि शिक्षा को लेकर महात्मा गाँधी का जो दृष्टिकोण था, उसके अनुरूप यहाँ के शिक्षक और छात्र अपना व्यावहारिक आचरण भी रखते होंगे।

मित्रों! राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने शिक्षा को लेकर कई महत्वपूर्ण व्याख्यान दिये हैं। उनका कहना है– ''सच्ची शिक्षा वही है, जो मनुष्य को सच्चा मनुष्य बनाये। उसके समग्र विकास में योगदान दे

और उसे कर्त्तव्य–पालन के लिए प्रेरित करे।'' सामान्यतः शिक्षा को कक्षा में प्राप्त पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित कर देखा जाता है, लेकिन विभिन्न विषयों की पढ़ाई करते हुए डिग्री हासिल कर कोई रोजगार प्राप्त कर लेना ही, शिक्षा का एकमात्र उद्देश्य नही है। शिक्षा का परम उद्देश्य कहीं इससे अधिक काफी गुरूतर और महान है। गाँधीजी शिक्षा को धर्म और नैतिकता से पृथक् नहीं मानते। उनका स्पष्ट रूप से कहना है कि ''किसी भी समाज की शिक्षा उसके धर्म की शिक्षा के बिना निकम्मी है। धार्मिक–वृत्ति छात्रों को अपने माता–पिता, गुरूजन और समाज के श्रेष्ठजन के प्रति श्रद्धा के भाव रखने की प्रेरणा देती है। गाँधीजी धर्म को भी व्यापक परिप्रेक्ष्य में देखते हैं। वे मानवता को सबसे बड़ा धर्म मानते हैं और नैतिकता को मनुष्य को दी जाने वाली शिक्षा का अविभाज्य अंग मानते हैं। गाँधीजी स्वतंत्रता, समानता, न्याय आदि को व्यक्ति के समग्र विकास के लिए अत्यन्त आवश्यक मानते हैं। उन्होंने एक बार विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा था कि– ''जिस विद्या को ग्रहण करने से हमारी स्वतंत्रता हमसे दूर जाती दिखाई दे, उस विद्या का त्याग करना चाहिए। युवा–पीढ़ी यदि शौर्यहीन बन जाएगी, तो विद्या प्राप्त करके भी यह क्या कर लेगी? अतः विद्या प्राप्ति भी मानवता और नैतिकता की रक्षा से जुड़ी होनी चाहिए।''

प्यारे बच्चों! रामायण, महाभारत, वेद–पुराण, कुरान, बाईबिल आदि सारे धार्मिक–ग्रन्थ हमें सदाचार और मानवता के पथ पर चलने की ही प्रेरणा देते हैं। आधुनिक भारत का महान ग्रन्थ ''भारतीय संविधान'' भारतीय संस्कृति और जीवन का सर्वश्रेष्ठ मर्यादा–ग्रन्थ है। हमें इसकी 'प्रस्तावना' को अपने जीवन में हृदयंगम कर लेना चाहिए। इस 'प्रस्तावना' में ही समानता, स्वतंत्रता, शांति, न्याय एवं धर्म–निरपेक्षता आदि जिन बातों का उल्लेख है, वे हमारे जीवन के

नियमन के लिए बेहद जरूरी हैं। संविधान की 'प्रस्तावना' का शैक्षिक पाठ्यक्रमों में शामिल होना जरूरी है, जिस पर विद्यालयों में समय–समय पर परिचर्या हो, ताकि शिक्षा–जगत् संविधान में समाहित आदर्शों को आत्मसात कर सके।

भारतीय संविधान के प्रमुख रचयिता डॉ॰ भीमराव अम्बेडकर की स्पष्ट मान्यता थी कि सामाजिक न्याय की स्थापना में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका है। उनका विश्वास था कि शिक्षा के अभाव में कोई भी व्यक्ति अपने कर्त्तव्यों और अधिकारों का समुचित निर्वहन और संरक्षण नही कर सकता है। स्वतंत्रता, समानता एवं बंधुता जैसे उद्दात मूल्यों भी तभी साकार हो सकते हैं, जब समाज में शिक्षा का समुचित प्रसार हो।

आधुनिक युग में मौजूदा शिक्षा–व्यवस्था में पूंजी और टेक्नोलॉजी का हस्तक्षेप बढ़ा है, लेकिन सामाजिक न्याय और लोक–कल्याण के लिए निरंतर 'स्पेस' कम होता जा रहा है। आज आवश्यकता है कि हम तकनीकी और वैज्ञानिक विकास की प्रक्रिया के दौर में भी अपने सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा के प्रति सजग–सचेष्ट रहें। भारतीय संस्कृति भौतिक विकास के साथ–साथ, आध्यात्मिक विकास पर भी जोर देती है। सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता की बात जब मैं करता हूँ, तो इसका सीधा मतलब यह लिया जाना चाहिए कि हमें अपनी ऐतिहासिक विरासतों, भारतीय परम्पराओं और शाश्वत मानवीय मूल्यों के प्रति पूरी तरह आस्थावान रहना है। वैज्ञानिक विकास अगर मानवीय हितों का ख्याल रखते हुए होता है, तो उसमें किसी को भी आपत्ति नही हो सकती। किन्तु, राष्ट्र की संस्कृति और सभ्यता की मौलिकता की रक्षा देश के नागरिकों का परम कर्त्तव्य है।

प्यारे बच्चों, आप जानते हो कि भारत के एक महान संत स्वामी विवेकानन्द जी ने अमेरिका में 'शून्य' पर अपना एक मौलिक और अत्यन्त गंभीर उद्‌बोधन दिया था। उन्होंने भी भारतीय शिक्षा के सारभूत तत्वों की चर्चा करते हुए कहा है कि –''जो शिक्षा मनुष्य को जीवन–संग्राम में उतरने में समर्थ नहीं बना सकती, मनुष्य में चरित्र–बल, परहित भावना तथा सिंह के समान साहस का भाव नहीं जगा सकती, उसका कोई महत्व नहीं है। वस्तुतः हमें ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है, जिससे चरित्र–निर्माण हो, मानसिक शक्ति बढ़े, बुद्धि विकसित हो और देश के युवक अपने पैरों पर खड़ा होना सीखें।'' स्पष्ट है, स्वामी विवेकानन्द जी एक आदर्श विद्यार्थी में स्वाभिमान, साहस, चरित्र–बल और आत्मनिर्भरता जैसे गुणों का समाहार आवश्यक मानते हैं।

आज आपके इस प्रतिष्ठित विद्यालय के 'शताब्दी–समारोह' के सुअवसर पर मैं आपको हार्दिक बधाई देता हूँ। मुझे बताया गया है कि आपके विद्यालय के कई तेजस्वी छात्र, सेवा के विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत रहकर, इस विद्यालय और इस इलाके का नाम रोशन कर रहे हैं। इस विद्यालय में अध्ययनरत छात्रों को उनसे प्रेरणा लेनी चाहिए।

आइए, हम सभी मिलकर एक सुन्दर प्रान्त और देश के नवनिर्माण का संकल्प लें तथा भारत के संविधान में वर्णित लक्ष्यों, जैसे–समाज में सद्‌भावना, प्रेम, त्याग, बंधुत्व, समानता, स्वतंत्रता और न्याय को प्राप्त करने में सदैव तत्पर रहें। एक बार पुनः आप सबको बहुत–बहुत धन्यवाद!

जय हिन्द!!

***